Sudha Bhardwaj

मेरा नाम सुधा भारद्वाज है मैं करीब सन १९८३ से छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा से सम्पर्क रही वैसे मेरी पढाई दिल्ली और कानपुर में हुई है । और मै टीचर थी दिल्ली में । दिल्ली पब्लिक स्कूल में । लेकिन उसी समय से मजदूरों के मामले में मै क्योकि काफी रूचि ले रही थी और वहाँ पर हमारा एक स्टूडैन्ट का ग्रुप भी था जो मजदूरों के बीच में काम करता था

जो एशियाड वगैरा के समय जो मैग्राड वर्कर्स थे उनके बीच में हम लोग जे.एन.यू आल इण्डिया मैडिकल इन्स्टीटयूट के कुछ लोग हम लोग शिक्षा और हैल्प के कैम्प वगैरा लगाते थे तो वहाँ हम लोगों ने जो स्थिति देखी छत्तीसगढ से भी मजदूर उसमें आये हुए थे और उन स्थितियों को देखने के बाद हम लोग बहुत प्रभावित हुए । हमें लगा भी के यह जो है यह एक बहुत कठिन समस्या भी है । इसको किस तरह से ठीक ठाक करना चाहिए तो उस समय हमें सुनने में आया कि शंकर गुहा नियोगी जिस तरह का काम कर रहे है ट्रेड यूनियन के फिल्ड में दल्ली राजहरा में वह काफी मुनिक एक्सपेन्स है उसके पहले भी हम जब हमने दिल्ली में डेमोस्ट्रेशन वगैरा देखे उस समय नियोगी जी को एन.एस.ए के अन्तर्गत तो जब उनकों एन.एस.ए में पकडा गया था शायद १९८१ के आस पास की बात है ।

उस समय दिल्ली में भी जो टेक्सटाईल मजदूरों ने भी जूलूस वगैरा निकाले थे और जे०एन०यू. वगैरा में भी इन्टलक्यूलस वगैरा के बीच में सिगनेचर कैम्पीन वगैरा हुआ था

तो इसलिए क्योकि मै जे.एन.यू कैम्पस में रहती हूँ मेरी माँ भी इन्फैक्ट उसकी एक सगनेटरी थी तो इस तरह से हम लोगों को उनके बारे में जानकारी थी

तो पहली बार १९८३ में जो १९ दिसम्बर को वीर नारायण सिंह का दिवस हुआ था तो उसमें हम लोग एक ग्रुप के तौर पर छत्तीसगढ गये और उसमें से बाद में हम दो लोग जो है लगभग १९८५-८६ से वहाँ पर प्रमोनेन्टली सिफ्ट हो गये । काफी इन्सपायर हुये थे वहाँ के मोमेंट से ।

Q- आप कानपुर दिल्ली में बाकी भी लैफ्ट ग्रुप से थोडा बहुत पहचान थी ऐसा क्या था मुक्ति मोर्चा के यूनियन में जो बाकी लैफ्ट यूनियन था उसे अलग या डिफरेन्ट था जिससें आप लोगों ने यहाँ पर आने के लिए सोचा ।

Ans- वहाँ पर पहली बार जब हम लोग गये थे १९८३ में तो एक तो १९ दिस्मबर वीर नारायण सिंह जो १८५७ के जो आदिवासी हीरों को जो इतिहास नियोगी जी ने निकाला था और उसके एक तरह से क्लेम किया गया था यह जो मजदूर वर्ग है पर किसान वर्ग या जो मेहनत कस है छत्तीसगढ के उन्होने जो है अपने इतिहास को क्लेम का लिया है । खुद और बल्कि उन्होने ही बीर नारायण सिंह को स्थापित किया जो तब भी गेजेट के अनुसार एक बैंडिट के नाम से जाने जा रहे थे ।

और उनको एक फीडम फाइटर का एक हीरो का दर्जा दिया था तो एक तो यही अपने आप में एक बडी जबरदस्त बात थी कि एक मजदूर यूनियन इस प्रकार से काम को सस्कृति के

क्षेत्र में और उस समय यह भी देखने को मिलता कि वहाँ पर उनके कल्चर रूप के माध्यम से आल नाईट जो है एक वीर नारायण सिंह का नाटक भी किया जाता था तो सैकडों गांव में खेला जा चुका था हम तो उस कार्यक्रम में पहली बार गये थे ।

लेकिन जो दो तीन बाते और थी एक तो यह था कि जो कैन्सफट है लाल हरे डन्डे का जिसमें मजदूर और किसान दोनों का यह है । हम लोगों ने पहली ही बार में उसको देख लिया था कि किस प्रकार से आस पास के तमाम गांव में छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा का जो संघर्ष चल रहा और किस प्रकार से किसानों को उन्होने जोडा हुआ है ओर मजदूर कार्यकर्ता वहाँ जाते है । वहाँ एक नेतृत्व का काम कर रहे है । वह भी एक जबरदस्त बात थी । दूसरी बात यह थी कि जो आते ही हमने वहाँ देखा जो टंगा हुआ था लिस्ट १७ विभाग जो ट्रेड यूनियन के बताये जाते थे और उसमें शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, महिला विभाग, बचत विभाग, प्रजा विभाग और इस प्रकार से जो उसमें तमाम विभाग थे कि मजदूर को जो है समाज का नेतृत्व करना है और उसको हर जो पहले मे उसको एक विकल्प देना है तो यह एक समझदारी थी । इस समझदारी के अनुसार कोई विभाग ज्यादा बढ गया था

हम जब गये थे तो शहीद अस्पताल का उस समय वहाँ एक डिस्पन्सरी के रूप में था छोटा सा अस्पताल भी शुरू हो गया था स्कूले भी चल रही थी लगभग ११ स्कूल उस समय यूनियन के द्वारा चलाये जा रहे थे । तो कोई कोई विभाग आगें बढा हुआ

था कोई विभाग उतना ज्यादा बढ नही पाया था लेकिन एक कम से कम कन्सफशन इस चीज का था ।

तीसरी चीज यह थी कि यूनियन का भी जो कन्सफैट था कि मजदूरों के बीच में भी जो काम है वह काम भी उसमें स्पष्ट यह था कि हमारी यूनियन ८ घन्टें की यूनियन नही है । हमारी २४ घन्टें की यूनियन है कभी भी हमने यूनियन के दरवाजे बन्द नही देखें और किसी मुददे के लिए यूनियन का ..... नही देखा चाहे पति पत्नि के झगडें से लेकर मोहल्ले का मामला । कोई जाति वाद का मामला कोई बाकी तो खैर पुलिस और अधिकारियों के जुल्म बगैरा की बात तो भी ही

लेकिन तमाम किस्म की जो समस्याऐ थी मोहल्लें में साफ सफाई की बात । चाहे या कोई डिस्टीटयूट व्यक्ति है उसकी तबियत खराब है या कोई देखने वाला नही है तो उसको कैसे कैसे किया जाए । हर प्रकार की समस्याओं को लेकर बडें विश्वास के साथ लोग वहाँ पर आते थे । मुझे तो एक बहुत अच्छा वाक्या याद है कि छत्तीसगढ में जो है वैसे तो जाति प्रथा उतना ज्यादा मार्ट नही है जितना यूपी या बिहार में है लेकिन एक जो समाज है जो सतनामी समाज कहलाता है जो सतगुरू दासीदास के जमाने से पहले अछूत माने जाते थे परन्तु सतनामी समाज के रूप में उन्होंने अपना सभ्य नाम के गायक सेट से शुरू किया था और आये थे और इस हिसाब से काफी आज की स्थिति में ज्यादा इन्टीग्रेटिड है हालांकि आज भी खानें पीने का रिस्ता अक्सर दूसरे जातों से नही रहता है लेकिन उसके अलावा एक

देवार नाम की जात है ।जो आज भी काफी ज्यादा मारजनालयड है । तो हमें अच्छी तरह से याद है कि देवारों की समस्या उस समय चल रही थी जो सुअरों को चराते है उन सुअरों में बिमारी हो गयी थी और यह एक बहुत बड़ी समस्या थी उनके लिए और उनको क्योंकि अछूत समझा जाता है कि सुअरों को चराते है वगैरा वगैरा तो वह लोग आये थे और जब उनको यूनियन आफिस में कुर्सियों पर बिठाया गया उनके नेताओं को, उनके कुछ मजदूर लोग भी थे तो कभी भी उनके साथ यूनियन में डिस्टमेशन नहीं हुआ था कि आप देवार जाति के हो

बल्कि यह चीज तो मजदूर की कान्सीनश उस तरह से थी ही नहीं तो जब वह कम्युनिटी के लोग आये और बैठें चाय पीये खाना खाये तो वही चीज उनको जो एक डिकरेटिव प्रदान करने वाली चीज थी उनको बहुत ही अच्छा लगा था तो हर प्रकार की जो समस्याए थी जब दल्ली राजहरा मे फलट्स हुए थे तो फलट्स के समय भी जो न वहाँ पर लोगों का बचाना ।

हर प्रकार की समस्याओं के लिए तैनात रहते थे वहाँ पर अपनी एक मैस भी चलती थी वह भी एक मजेदार बात थी कि मैस चलती थी और बाद में हम लोग तो बाद में जुडे तो हमने देखा यह हर आफिस के यह सब फीचरर्स थे लोगों का आना जाना मैस का होना । किसानों का वहाँ पर आना जिससे हमेशा कार्यकर्ता लोग जो गीने चूने कार्यकर्ता लोग होते थे जो बहुत ही मगर अपनी यूनियन के जो मदद से जो काम करते थे लेकिन कम से कम एक मैस का होने से चाहे गांव के लोग हो चाहे कार्यकर्ता

लोग हो उनकों एक निश्चित होकर काम करने की एक स्थिति थी जो यह सब देखकर हमे लगा कि यह ट्रेड यूनियन वाकई में दूसरे ढंग को ट्रेड यूनियन है और इसमें हमकों जुडना चाहिए और यह जो हमने वहाँ पर जो आगेनाईजर लेबर और माइग्रेड लेवर की जो पीटियेबल कन्डिशन देखी थी जिसमें हमको दिख रहा था कि जो सेन्ट्रल ट्रेड यूनियन है उसमें वह इन्टरवीन कर ही नही पायेगे उसके विपरित हमने वहाँ के ट्रेड यूनियन की व्यवस्था देखी तो इसलिए हम इससे काफी प्रभावित हुए । और हमने जबरदस्त पहलू देखा उस यूनियन का । १९८४ में उस समय एक सोलीडारटी के तौर पर जो है दल्ली राजहरा के मजदूर कही जगह और आन्दोलन में भाग लिया करते थे और चाहे गांव में हो चाहे शहरों में हो तो राजनाँद गांव में जब बीनसी टेक्सटाईल मिल में आन्दोलन हुआ था तो वहाँ की नेतृत्व भी राजनाँद गोव कपडा मजदूर सघं लाल हरा झंडा के तहत वहाँ भी ट्रेड यूनियन की लडाई चल रही थी तो यह १९८४ की बात है जब यह लडाई भी चल रही थी और उस समय धरने वगैरा पर बैठें हुए थे साथी लोग राजनाँद गांव के अन्दर जिस समय इन्दिरा गाँधी की एसीसनेशन की खबर आई ।

और उस समय जिस प्रकार से तत्काल रेडियों और टीवी पर यह बात भी आयी कि सिख धर्म के एक व्यक्ति ने उनकों मारा है तत्काल नियोगी जी जहाँ कही भी थे शायद राजधानी से वापिस आ रहे थे । उस समय मध्यप्रदेश का हम हिस्सा थे तो वहाँ से वापिस आ रहे थे तो वहाँ एक तो वह तत्काल राजनाँद

गांव गये और बोले के अभी एक बहुत बडा इस प्रकार का हमला हो सकता है । सिख लोगों के उपर और इसीलिए हमकों अभी धरना वगैरा के बारे में नही सोचना चाहिए । अपनी छोटी चीज के बारे में नहीं सोचना चाहिए । उन्होने दल्ली राज हरा में पूरी मुखियों की मीटिंग बुलायी ।

उसके पीछें का बैक ग्राउन्ड यह था कि शराब बन्दी का जो आन्दोलन था वह बहुत मजबूती से चला था । महिलाओं और पुरूषों दोनों और काफी सकससफुल रहा था । और उस वजह से गुलवीर सिंह भाटिया और अन्य कुछ लोग जो शराब के ठेकेदार थे जो कुछ सिख लोग भी थे उनके साथ काफी टेन्शन भी रह चुका था इससे पहले बल्कि गुलवीर सिह भाटिया के द्वारा जो है कि नियोगी जी की जान पर भी एक दो बार हमले हो चुके थे तो उस समय जो है बल्कि गुलवीर सिंह भाटिया ने जिस समय ट्रेड यूनियन की तरफ से आन्दोलन किया गया था उस समय उसने इस प्रकार के पर्चे समुदाय में बाटें थे कि यूनियन मेरे खिलाफ है वगैरा बगैरा । और मुझें अब उस पर्चे का पूरा याद नही है लेकिन एक गुरू गोविन्द सिंह के घोडे की कुछ बात की कहावत को लेकर के नियोगी जी ने एक अन्य पर्चा सिख लोगों के बीच में यह कहा था कि हमारा सिख धर्म के बारे में कुछ नही है बल्कि हम जो शोषणकारी लोग है उनके खिलाफ हम है । वगैरा वगैरा ।

तो यह पहले कि बात हो चुकी थी और १९८४ के अन्दर इस प्रकार की चीज हुई तो तत्काल दल्ली राजहरा के मुखियाओं

के बीच में बात हुई पूरे दल्ली राज हरा और आस पास में अनाउन्समेन्ट किया गया कि जो भी सिख साथी है वह हमारे यूनियन दफतर में आये और बिल्कुल वह लोग सुरक्षित है किसी भी प्रकार की घटना उनके साथ नही होगी यूनियन उनका साथ देगा । और सैकडों की सख्या में सिख लोग वहां शरण लेने के लिए आये और उन्होने वहाँ पर खाना पीना वगैरा मैस में उनका सब चलता रहा ।

पूरी तरह से वह लोग सुरक्षित रहे और बल्कि वह इतने खुश होकर गये कि बात में जो उनके गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी लोकल लेवल के लोग थे उन्होने आकर धन्यवाद भी किया और उन्होने वह जो शराब के ठेकेदार थे जो सिख धर्म के थे उनकों भी काफी डांटा धमकाया और उनको पब्लिक से माफी मागनें को कहा । कि इस प्रकार की जो यूनियन है जिसके ऐसे विचार है इसके खिलाफ इस तरह के एक्जीविटिज बहुत खराब है । तो यह घटना जिस प्रकार से शराब बन्दी की घटनाओं में महिलाओं का जो इन्वोलवमैन्ट था जो एक मास लेवल पर वह बडी कडिविटी के साथ यह समझते हुए कि एक घर के अन्दर जो महिला और पुरूष का झगडा होता है वह एक तरह से एक महिला के उपर आ जाती है । परन्तु महिला जब तक सामाजिक मुददे में भाग लेती है तो उसके पति को भी तो जो है कि भले वह अन्दर से कुछ भी सोचे मुंह से तो बोलना पडता है कि वह एक बहुत अच्छा काम कर रही है । और इस प्रकार से महिला कार्यकर्ताओं को ताकत देने के बाद फिर उनके जो घरेलू मामलों को भी डील किया जा

सकता है । महिला को एक बडी सख्या में उसमें उनकी फोर्सस को एक तरह से अनलीस करना और उसके माध्यम से जो एक इकोनोमिक हुआ था तीन रूपये रोजी से लेकर काफी रोजी तो उस समय बढ गयी थी वह जो शराब में जा रहा था उसको एक पोलटीकल इकोनोमी के ढंग से समझा करके कि यह जो चीज है जो पूंजी पति आपको बडी मुशिकिल से आपने उससे खिचा है वह वापस आप शराब के ठेकेदार को देकर उसी व्यवस्था में दे रहे है । इस नारे के साथ जिस तहर का मूवमैन्ट हुआ और उसके अन्दर शराबियों को पकड कर लाना सामूहिक सास्कृतिक कार्यकम, फुटबाल, वालीवाल वगैरा खेल करके एडीक्ट टाईम के लोगों को आफिस में बिठा कर रखाना उनकी तनखाओं को उनके परिवार को दे देना ।

यहाँ तक कि महिलाए बच्चें पकड कर लाते थे अपने शराबी बाप को अगर वह कही पडा है तो, एक बडी कयेटिव तरीके से देखा गया तो इन सब वजहों से जो है कि काफी अलग लगा ।जो व्यूरो कयेटिव टाईप के ट्रेड यूनियन जो मास इकोनोमिक डिमाण्ड को भी उठाना उनका काम है । चार्जशीट का जवाब देना उनका काम है साल में एक बार बोनस और बेगरीवयन की लडाई लडना है और इसके अलावा जो है न व जिदंगी के किसी भी पहलू से ज्यादा सम्बधित नही रहते है ।

Q- जो दल्ली राजहरा में आन्दोलन शुरू हो तो मकेनाइजेशन के सवाल को लेकर जो बोनस मिल रही थी उसकी सवाल को लेकर यह आन्दोलन छिडा और उसने बहुत हद तक आगें सक्सस भी

मिली । तो थोडा मोटा मोटा जो उसका मेन इश्यूज क्या थे दल्ली की मूवमैन्ट का ।

Ans- दल्ली राज हरा में जब आन्दोलन शुरू हुआ था तब तक खैर परिस्थितियाँ बहुत सीरियस थी एक तो पूरी प्रोसेस कान्ट्रेक्ट लेवर के अन्दर बहुत लम्बे काम के घन्टे थें । धयाडी लगभग ३ रूपया थी काम बडा रिसकी था और शोषण भी कान्ट्रेक्टर का इन्कलूडिंग महिलाओं के उपर । महिलाऐ भी लगभग वहाँ पर आधा सख्या में थी और आज भी है उस काम के अन्दर यह सब परिस्थितियाँ थी कि जिससे विद्रोह करके और उसमें जो विशेष रूप से जो डिपार्टमेन्टल और कॉन्ट्रेक्टचूल लेवर का बडा एक विलेटिन डिस्करमेशन था के डिपार्टमैन्ट के हन्डफूल वर्कर जो थे उनकों तो क्वाटर और मैडीकल और हैल्थ वगैरा स्कूल वगैरा सब की सुविधा थी लेकिन कन्ट्रेक्ट चूल इस्टरमेशन को कुछ भी नही था तो इस अन्याय के खिलाफ और इमीडेट इश्यू उस समय बोनस का था । उस अन्याय के खिलाफ इन्सीपेन्टी नियश्ची जो है लोगों ने वहाँ के जो इन्टूकोरेटक दोनों यूनियनों को छोडकर लाल मैदान में बैठ गये थे यह १९७७ की बात है ।

नियोगी उस समय इमरजैन्सी में जेल में थे और जेल से छूटे ही थे और छूटते ही वह दल्ली राज हरा आ गये थे लोग उनकों बुलाने के लिए लोग गये थे वह भी नही गये थे । अपने क्योकि उनके बारे में एक मजदूरों के अन्दर इमेज था यह दाली टोला में रहते थे । खुद भी मजदूरी करते है और बहुत ही ईमानदार और जुझारू किस्म के यंग नेता है । तो उन्होने वहाँ

आकर कमान सभाली और उसमें जो लडाई थी उसकी १८ सूत्रीय मांग उसकी समय से शुरू हुई थी । १९७७ में उस १८ सूत्रीय मांग का जो १८ वां पाइंन्ट था कि उनको भिलाई स्टील पलॉन्ट का मजदूर समझा जाय वह लगभग तीन चार साल पहले एक तरह से पूरा हुआ जब से एग्रीमेन्ट के साथ उस समय में गेलोवलाईजेशन के दौर में जब लोगों को निकाला जा रहा है उस समय हमारी यूनियन ने एक डिपार्टमन्ट वाये नेशन का करार दिया । वह डिपार्टमेन्ट पिररेअअ वर्कर ही हुए थे उससे पहले की जितनी इकानोमिक डिमान्डस है वह नियोगी जी के रहते हुए भी पूरी हो चुकी थी । और कहना चाहिए कि कान्ट्रेक्ट वर्करों को जो कुछ भी सुविधा मिल सकती है । सम्भवतः दल्ली राजहरा माईन्स वर्कर शायद हिन्दुस्तान के सबसे हाईली पैड अलावा सभी फस्लीटिज प्राप्त करने वाले श्रमिक थे तो एक इकोनोमिक लडाई तो बडे जुझारूपन से लडी गयी लेकिन उसमें जो एक सबसे बडी लडाई थी जो हमारे ट्रेड यूनियन ने लडी । वह उन १८ सूत्रों कहीं दिखाती नहीं है । और वह असली लडाई है । मशीनीकरण के खिलाफ क्योंकि एक बडी विचित्र बात है कि ट्रेड यूनियन को जो कन्टेक्ट है ट्रेड यूनियन जिा वहज के लिए कन्सयूलेशन कर सकता है उसमें जो टेक्नीक प्रोडक्शन के उपर वह कोई डेगोरेशन नहीं कर सकता है ।

यह एक बहुत बडी दिक्कत आती है ट्रेड यूनियन के साथ और इस लिए इसको ट्रेड यूनियन स्तर पर ही नहीं लेकिन छत्तीसगढ मुक्ति मोर्चा के स्तर पर मशीनीकरण का मुददा

उठाया गया और वहां के युवओं के रोजगार के प्रशन को उठाकर भी किया गया उसका एक छोटा सा बैक ग्राउन्ड है वह यह है कि उस समय पास बैला ढीला खाददानें है वहाँ पर पहले एटक की यूनियन थी वहाँ पर एक समझौता हुआ था मशीनीकरण का अब समझौता जिस भी ढंग से हुआ हो लेकिन वहाँ के स्थानीय नेता उसके काफी विरोध में थें श्रमिक भी काफी विरोध में थे और लास्ट स्टेज पर उन्होने बहुत बाहदुरी से लडा भी ।

लेकिन बहुत विरेपरेशन हुआ दस हजार मजदूरों को वहाँ से खदेडा गया पूरी तरह से और उसके लिए बडा एक प्ररूटल फाईरिंग हुआ । यहाँ तक कि घरो को आग लगा दी गयी औरतों के साथ बलात्कार वगैरा हुआ । छोटे बच्चों को झोपडियों मे जलाया गया आज वह इलका जो है बोला जाता है जो नक्शलाईड एरियाज के प्रभाव का क्षेत्र और यह चीज समझी भी जा सकती जहाँ पर १० हजार मजदूर थे और जो कमा रहे थे वहाँ पर उनके साथ जो हुआ तो उस घटना के बाद जो कि घटना १९८९ की है किरण दूल का जो जबरदस्त पुलिस फायरिंग है उसमें एक तो नियोगी जो, जनकलाल जी स्वयं यह लोग । इन्होने बडी रप्रेशन कि स्थिति में जाकर वहाँ पर मदद की । ट्रकों में चावल भरकर भेजा गया सोलडरटरी भी किया गया लेकिन उसके साथ यह समझदारी भी दल्ली राजहरा में फेलनी शुरू हो गयी कि जो पूर्ण मशीनीकरण है उसका हमकों विरोध करना है और छत्तीसगढ माईन्स श्रमिक सघं का जन्म हुआ था उसी समय से प्लानिंग था कि पूर्ण मशीनीकरव पूरे खाददानों को करना है ।

ओर १९७१ में यह ब्लू प्रिंट बन चुका था लेकिन कई कई कारणों से वह नही हो पा रहा था १९८९ में जब किरणदूल केस के बाद पूरी सीएमएम ने जाकर के एक काला झन्डा जो दल्ली राजहरा माईन्स आफिस के आगें गाडा गया और यह कहा गया कि मशीनीकरण हम यहाँ पर होने नही देगें ।

अब एक तो उसमे होता है कि जो मशीनीकरण के खिलाफ जो है ट्रेड यूनियन का मुददा है कि इसमें रिटरेन्चमेन्ट होगा और लोगों की नौकरिया जायेगी लेकिन छत्तीसगढ माईन्स श्रमिक सघं ने अपने को इसमें कन्फाईन नही किया एक तो यूनियन के द्वारा बहुत डीप उसमें स्टडी की गयी कि जो मैनेजमैन्ट का कथन है कि हमकों कास्ट इफेक्टिव चाहिए हमको बढिया क्वालिटी चाहिए । हमको कम्पलीट करना है । तो इन मुददों को भी बडें सिरीयसली लिया गया कि इकोनोमिक्स क्या है माईनिंग के और एक बडा एप्लीकेशन के साथ और लोगो की विजडम को जोडते हुए और ग्राउन्ड कन्डीशन को देखते हुए एक सेमी मकेनिजम का एक प्रपोजल यूनियन की तरफ से रखा गया ।

उसमें यह था कि जो ओवर वर्डन जो हटाना है व मशीन द्वारा किया जाये और जो रेजिंग लोडिग का काम है वह मजदूरों द्वारा किया जाये । क्योकि जो मशीन है उसकी तो आखो है नही तो जब ओवर वरडन हटाया जाता है जिसमें मिटटी होती है माल नही होता है परन्तु जब एक्चूयली जो आयरन हो जाता है उस समय जो ओवर फेस पर ही माईन्स के फेस पर ही जब सफरेट हो जायेगा बढिया क्वालिटी जो उसकी और है हैन्ड लेवल पार्ट है

फाईन्स का पार्ट है तो यह एक बहुत बडा काम जो बाद में करना आपकों स्कीनिग से कशिग से और तमाम तरह की मशीनरी लगाने के बावजूद भी आप उसको नही कर पाते है । वह काम मैनूवल माईनिंग में हो सकता है तो इस सोच के साथ एक सेमी मकेनिजम का एक प्रपोजल दिया गया जिसकों भिलाई स्टील प्वाइंट गजली मान तो लिया क्योकि कास्टी फिकटिव तो था रेटरेचमैन्ट की बात भी उसमें नही थी लेकिन जो अन्डर स्टेन्डिग थी कि यह सेमी मैकेनिजम का प्रोसस लागू होगा उसके बाद उसका रिव्यू किया जायेगा । कभी भी मैनेजमैन्ट ने उसकों आज तक रिव्यू नही किया है मैनेजमैन्ट ने यह जरूर कहा कि एग्जेसटिंग जनरेशन वर्कर है उनकों हम रिवेन्च नही करेगें । एक्चूयली यह हुआ कि रिटरेन्च तो नही किया गया लेकिन रिक्यूटमैन्ट भी नही किया गया ।

इसलिए एक नचुरल डैथ की वजह से यह लोगों को डिपार्टमैन्ट लायज करने के बाद भिलाई भेजना हिरी भेजना यहाँ भेजना वहाँ भेजना इस वजह से जो माईन्स नचुरैली खाली होती जाती है उसकों यह मैकेनाईज के लपेट में लेते जा रहे है उस समय भी दल्ली राज हरा की एक मैकेनाइज माईन्स थी । एक शिफट वह चलती थी । एक शिफट मनुअल चलती थी और मजे की बात यह है कि मैकेनाईज माईन्स इतनी प्रोबल्म हो गयी थी कि मैकेनाईज माईन्स में एक तो यह दिक्कत थी कि उसके क्वालिटी के उपर कोई कन्ट्रोल नही रहता था और अक्सर यह देखा जाता था कि मैकेनाइज माईन्स की जो क्वालिटी को ठीक

करने के लिए मनुअल को उसमें वलैड कर देना पडता था क्योंकि मनुअल क्वालिटी बहुत हाई रहती थी । उससे ज्यादा दूसरी बात यह थी कि जो एडीशनल स्क्रीनिंग और कासिंग करके जो फाईन्स को निकालने की प्रोसस होती थी वह एक एडिशनल काम करके उसमें हो जाता था क्योंकि वह सबल उठाता है बडे बडें गढढें हो जाते थे जिन गढढों में पानी भर जाता था तो बाद में माईनिंग करना भी इम्पोशिबल हो जाता था ।

तो कई वजह से अक्सर बीच बीच में मेकेनाईज माईन्स बन्द हो जाती थी और मनुलस पर ही रिलायन्स बढ जाती थी । एक एक्सपैक्ट और है मैकेनाईजम लडाई में वह यह है कि जब हम कहते है कि उधोग से समाज में खुशहाली आयेगी । खुशहाली कैसे आयेगी । मुनाफा तो आखिर उधोगपति के पास ही रहता है जो समाज मे आता है वह बैटर है । और जो वेतन है वह बाजार में आता है और बाजार मं आने के बाद वह व्यापर को एक डिमाण्ड देता है । गुडस के लिए और रिससियन को हटाता है प्रचेचिंग पावर लोगों के अन्दर केट कर देता है दल्ली राज हरा आस पास अगर आप देखें दल्ली राज हरा की दो टाउनशिप है करीब एक ।